FACULTY OF LANGUAGES

SYLLABUS

FOR

PRE PH.D. HINDI

EXAMINATION: 2019-20

GURU NANAK DEV UNIVERSITY AMRITSAR

Note: (i) Copy rights are reserved.
Nobody is allowed to print it in any form.
Defaulters will be prosecuted.

(ii) Subject to change in the syllabi at any time.
Please visit the University website time to time.

PRE PH.D. HINDI (CBEGS)

Scheme of Course

HIL-901:	’kks/k&izfof/k	4-0-0
HIL-902:	fgUnh dk ,sfrgkfld] HkkSxksfyd ,oa Hkkf"kd Lo:i fgUnh dh ,sfrgkfld i"BHkwfe	3-0-0
HIL-903:	Hkk"kkfoKku % v/;;u fof/k	3-0-0
HIL-904:	vuqokn dk l)kfUrd i{k	3-0-0
HIL-905:	fo'ks"k jpukdkj mÙkj&vk/kqfud vkykspuk	3-0-0
HIL-906:	rqyukRed lkfgR; v/;;u	3-0-0
HIL-907:	lkfgR;ykspu dh i)fr;k¡ ’kSyhfoKku % l)kfUrd i{k	3-0-0
HIL-908:	fgUnh lkfgR; % izeq[k foe’k	3-0-0

Instructions:-

1. The student who qualify for Pre Ph.D Hindi without M.Phil shall have to study five papers including ID during Pre Ph.D course work.

2. The student who qualify for Pre Ph.D Hindi with M.Phil (from G.N.D.U.) shall have to study three papers including ID during Pre Ph.D course work.

PRE PH.D. HINDI (CBEGS)

HIL-901 % 'kks/k&izfof/k

Credit 4-0-0

ijh{kk dk fy, vko';d funsZ'k %

यह प्रश्नपत्र चार भागों में विभाजित होगा। परीक्षक द्वारा प्रत्येक भाग में से दो–दो प्रश्न पूछे जायेगे। कुल आठ प्रश्न पूछने हैं। परीक्षक प्रत्येक प्रश्न के दो, तीन अथवा अधिकतम चार उपभाग कर सकता है। परीक्षार्थी को कुल पांच प्रश्न करने हैं। प्रत्येक भाग में से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा और पांचवां प्रश्न परीक्षार्थी किसी भी भाग से कर सकता हैं। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का होगा।

lsD'ku&,

'kks/k rFkk fgUnh 'kks/k

क) शोध : अभिप्राय, समानार्थक शब्द, परिभाषा, स्वरूप विवचेन (शोध–कार्य के विभिन्न चरणों का संक्षिप्त विवरण)

ख) हिन्दी में शोध कार्य की परम्परा : सोपाधि और निरूपाधि शोध के संदर्भ में

ग) हिन्दी शोध की समस्याएँ और प्रस्तावित समाधान

lsD'ku&ch

lkfgfR;d 'kks/k dh fofHkUu dksfV;ka %

क. वर्णनात्मक–व्यांख्यात्मक शोध

ख. सांस्कृतिक शोध

ग. समाजशास्त्रीय शोध

घ. भाषावैज्ञानिक शोध

ङ़ मनोवैज्ञानिक शोध

lsD'ku&lh

lkexzh ladyu

'kks/k rFkk fgUnh 'kks/k

क) समग्री संकलन के प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत

ख) साक्षात्कार : स्वरूप, प्रकार और विधियाँ

ग) प्रश्नोत्तरी : निर्माण और निष्कर्षों के आकलन की प्रक्रिया

lsD'ku&Mh

'kks/k lkexzh dk izLrqrhdj.k

क) पाद टिप्पणी : महत्त्व और विभिन्न प्रकार की सामग्री को प्रस्तुत करने के उदाहरण

ख) संदर्भिका तथा अनुक्रमणिका

'kks/k rFkk fgUnh 'kks/k

क) रूपरेखा निर्माण (सोदाहरण)

ख) शोध–प्रबंध में भूमिका लेखन (हिन्दी शोध से सोदाहरण)

'kks/k esa lax.kd dh Hkwfedk ¼lkexzh ladyu ls izLrqrhdj.k rd½

lgk;d iqLrdsa

1. फारूकी, क्यू. एच., टेकनीक आफ थीसिस राइटिंग, अलीगढ़ : मूस्लिम यूनिवर्सिटी, 1995.
2. शर्मा, विनय मोहन, शोध प्रविधि, नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1974.
3. शैलमुमारी, शोध–तंत्र और सिद्धान्त, दिल्ली : लोकवाणी प्रकाशन, 1976.
4. सहगल, मनमोहन, हिन्दी शोध–तंत्र की रूपरेखा, जयपुर : पंचशील प्रकाशन, 1976.

HIL-902 % fgUnh dk ,frgkfld]
Hkkxkfyd ,o Hkkf"kd Lo:i fgUnh dh ,frgkfld i"BHkfe

Credit 3-0-0

ijh{kk d fy, vko';d fun'k %

यह प्रश्नपत्र चार भागों में विभाजित होगा। परीक्षक द्वारा प्रत्येक भाग में से दो–दो प्रश्न पूछे जायेगे। कुल आठ प्रश्न पूछने हैं। परीक्षक प्रत्येक प्रश्न के दो, तीन अथवा अधिकतम चार उपभाग कर सकता है। परीक्षार्थी को कुल पांच प्रश्न करने हैं। प्रत्येक भाग में से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा और पांचवां प्रश्न परीक्षार्थी किसी भी भाग से कर सकता हैं। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का होगा।

lD'ku&,

vk/kfud Hkkjrh; vk; Hkk"kvk dh io ihfBdk

क) प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ : पूर्व पीठिका

ख) आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनका वर्गीकरण

lD'ku&ch

क) हिन्दी का भोगौलिक विस्तार

ख) हिन्दी की उपभाषाएँ

lD'ku&lh

क) हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ

ख) हिन्दी के विविध रूप

lD'ku&Mh

क) हिन्दी शब्द रचना

ख) हिन्दी की व्याकरणिक कोटियाँ

lgk;d iLrd %

1. हिन्दी भाषा की शब्द संरचना, भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली।
2. हिन्दी भाषा की संरचना, भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. हिन्दी भाषा का इतिहास, डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा, इलाहाबाद : हिन्दुस्तान एकेडमी।
4. हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप, हरदेव बाहरी।

HIL-903 : Hkk"kkfoKku % v/;;u fof/k

Credit 3-0-0

ijh{kk dk fy, vko';d funsZ'k %

यह प्रश्नपत्र चार भागों में विभाजित होगा। परीक्षक द्वारा प्रत्येक भाग में से दो–दो प्रश्न पूछे जायेगे। कुल आठ प्रश्न पूछने हैं। परीक्षक प्रत्येक प्रश्न के दो, तीन अथवा अधिकतम चार उपभाग कर सकता है। परीक्षार्थी को कुल पांच प्रश्न करने हैं। प्रत्येक भाग में से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा और पांचवां प्रश्न परीक्षार्थी किसी भी भाग से कर सकता हैं। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का होगा।

lsD'ku&,

क) भाषाविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
ख) ध्वनि और ध्वनिविज्ञान : सामान्य परिचय

lsD'ku&ch

क) शब्द और शब्दविज्ञान : सामान्य परिचय
ख) रूप और रूपविज्ञान : सामान्य परिचय

lsD'ku&lh

क) वाक्य और वाक्यविज्ञान : सामान्य परिचय
ख) प्रोक्ति और प्रोक्ति विज्ञान : सामान्य परिचय

lsD'ku&Mh

अर्थ और अर्थविज्ञान : सामान्य परिचय

lgk;d iqLrdsa %

1. भाषाविज्ञान की भूमिका, डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण, प्रकाशन, दिल्ली।
2. भाषाविज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी भाषा, डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना।
3. भाषाविज्ञान कोश, भोलानाथ तिवारी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

HIL-904 : vuqokn dk lS)kfUrd i{k

Credit 3-0-0

ijh{kk dk fy, vko';d funsZ'k %

यह प्रश्नपत्र चार भागों में विभाजित होगा। परीक्षक द्वारा प्रत्येक भाग में से दो–दो प्रश्न पूछे जायेगे। कुल आठ प्रश्न पूछने हैं। परीक्षक प्रत्येक प्रश्न के दो, तीन अथवा अधिकतम चार उपभाग कर सकता है। परीक्षार्थी को कुल पांच प्रश्न करने हैं। प्रत्येक भाग में से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा और पांचवां प्रश्न परीक्षार्थी किसी भी भाग से कर सकता हैं। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का होगा।

lSD'ku&,

अनुवाद : अभिप्राय तथा परिभाषांकन
अनुवाद : स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की परस्पर क्रिया

lSD'ku&ch

अनुवाद : अनुवादक संबंधी और अन्य अपेक्षाएं
अनुवाद : विस्तृत, सीमित और आदर्श स्वरूप

lSD'ku&lh

अनुवाद : कला, विज्ञान अथवा मिश्रित विधा
अनुवाद : समतुल्यता का आधार

lSD'ku&Mh

vuqokn dk fofo/k izdkj

क) अनुवाद विधा के आधार पर
ख) अनुवाद–प्रकृति के आधार पर
ग) लिपि के आधार पर

lgk;d iqLrdsa %

1. अनुवाद विज्ञान और संप्रेषण, हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली।
2. अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग, कैलाश चंद्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली।
3. अनुवाद प्रक्रिया, रीतारानी पालीवाल, साहित्य निधि, दिल्ली।
4. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेख, सुरेश कुमार, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।

HIL-905 % fo l jpukoknh vkj mÙkj&vk/kfud vkykpuk

Credit 3-0-0

ijh{kk d fy, vko';d funs'k %

यह प्रश्नपत्र चार भागों में विभाजित होगा। परीक्षक द्वारा प्रत्येक भाग में से दो–दो प्रश्न पूछे जायेगे। कुल आठ प्रश्न पूछने हैं। परीक्षक प्रत्येक प्रश्न के दो, तीन अथवा अधिकतम चार उपभाग कर सकता है। परीक्षार्थी को कुल पांच प्रश्न करने हैं। प्रत्येक भाग में से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा और पांचवां प्रश्न परीक्षार्थी किसी भी भाग से कर सकता हैं। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का होगा।

lD'ku&,

विसंरचनावादी और उत्तर–आधुनिक आलोचना
संरचनावाद और उत्तर–संरचनावाद

lD'ku&ch

विसंरचना : अवधारणा, स्वरूपगत विशेषताएं, प्रमुख मान्यताएं, प्रमुख व्यक्तित्व : देरिदा, डीमान, मिलर विसंरचनावादी आलोचना के घटक तत्त्व

lD'ku&lh

उत्तर–संरचनावाद : अवधारणा, स्वरूपगत विशेषताएँ
प्रमुख मान्यताएं, प्रमुख व्यक्तित्व : फूको, ल्योतार, वोद्रिया
उत्तर–संरचनावाद के घटक तत्त्व

lD'ku&Mh

अनुप्रयोग : देवीप्रसाद मिश्र की कविता, प्रार्थना के अंत में,
उदयप्रकाश की कहानी–वारेन हेस्टिंगज का सांड

lgk;d iLrd %

1. विनसेंट, बी. लीश. : डी कंस्ट्क्टिव क्रिटिसिज्म, न्यूयार्क : कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. गोपीचंद नारंग, संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र, दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
3. देवशंकर नवीन (संपा.), उत्तर आधुनिकता : कुछ विचार, दिल्ली वाणी प्रकाशन।

HIL-906 % r|yukRed lkfgR; v/;;u

Credit 3-0-0

ijh{kk d fy, vko';d funi'k %

यह प्रश्नपत्र चार भागों में विभाजित होगा। परीक्षक द्वारा प्रत्येक भाग में से दो–दो प्रश्न पूछे जायेगे। कुल आठ प्रश्न पूछने हैं। परीक्षक प्रत्येक प्रश्न के दो, तीन अथवा अधिकतम चार उपभाग कर सकता है। परीक्षार्थी को कुल पांच प्रश्न करने हैं। प्रत्येक भाग में से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा और पांचवां प्रश्न परीक्षार्थी किसी भी भाग से कर सकता हैं। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का होगा।

lD'ku&,

[k.M ,d % fl)kUr i{k

तुलनात्मक साहित्य : परिभाषांकन एवं स्वरूपांकन

तुलनात्मक साहित्य : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

lD'ku&ch

तुलनात्मक साहित्य में तुलना के आधार

तुलनात्मक अध्ययन की समस्याएँ

lD'ku&lh

0;kogkfjd i{k

lkLÑfrd ifjis{; esa mi U;kl dk r|yukRed v/;;u % 0;kogkfjd i{k

गुरदयाल सिंह का 'मढ़ी का दीवा'

जगदीश चन्द्र का 'धरती धन न अपना'

1. कथानक के आधार पर
2. चरित्र–चित्रण के आधार पर
3. समस्याओं के आधार पर

lD'ku&Mh

0;kogkfjd i{k

गुरदयाल सिंह का 'मढ़ी का दीवा'

जगदीश चन्द्र का 'धरती धन न अपना'

1. भाषा के आधार पर
2. देशकाल और वातावरण के आधार पर
3. कथ्य के आधार पर

lgk;d iLrd

1. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, इन्द्रनाथ चौधरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
2. तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप और समस्याएं, राजमहल बोरा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. तुलनात्मक साहित्य, एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. गिफर्ड, हैनरी, कम्पैरेटिव लिट्रेचर, लंदन, 1969।

HIL-907 % lkfgR;ykpu dh i!.kkyh 'kyhfoKku % l!)kfrd i{k

Credit 3-0-0

ijh{kk d fy, vko';d funs'k %

यह प्रश्नपत्र चार भागों में विभाजित होगा। परीक्षक द्वारा प्रत्येक भाग में से दो–दो प्रश्न पूछे जायेगे। कुल आठ प्रश्न पूछने हैं। परीक्षक प्रत्येक प्रश्न के दो, तीन अथवा अधिकतम चार उपभाग कर सकता है। परीक्षार्थी को कुल पांच प्रश्न करने हैं। प्रत्येक भाग में से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा और पांचवां प्रश्न परीक्षार्थी किसी भी भाग से कर सकता हैं। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का होगा।

lD'ku&,

'kyhfoKku % l!)kfUrd ifjp;

क) शैली : शैली सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोण, शैली और रीति

ख) शैलीविज्ञान : भारतीय एवं पाश्चात्य मत स्वरूपगत विशेषताएँ

lD'ku&ch

'kyhfoKkfud v/;;u e Hkk"kkoKkfud ihfBdk

क) विभिन्न महत्त्वपूर्ण पारिभाषिक

ख) भाषिक इकाइयां

lD'ku&lh

शैलीविज्ञान : प्रतिमान

आवश्यकता एवं अनिवार्यता

शैली चिह्नक प्रतिमान (सैद्धान्तिक परिचय)

lD'ku&Mh

अग्रप्रस्तुति प्रतिमान (सैद्धान्तिक परिचय)

'बहुत दिनों तक चूल्हा रोया' (नागार्जुन) कविता का शैलीविज्ञानिक विश्लेषण

lgk;d iLrd %

1. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, शैलीविज्ञान का इतिहास, दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
2. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, शैली और शैलीविश्लेषण, दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
3. सुरेश कुमार, शैलीविज्ञान, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
4. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, शैलीविज्ञान : प्रतिमान और विश्लेषण, दिल्ली : देवदार प्रकाशन।

HIL-908 ¼ fgUnh lkfgR; ½ i.e|[k foe'k

Credit 3-0-0

ijh{kk d fy, vko';d funs'k ½

यह प्रश्नपत्र चार भागों में विभाजित होगा। परीक्षक द्वारा प्रत्येक भाग में से दो–दो प्रश्न पूछे जायेगे। कुल आठ प्रश्न पूछने हैं। परीक्षक प्रत्येक प्रश्न के दो, तीन अथवा अधिकतम चार उपभाग कर सकता है। परीक्षार्थी को कुल पांच प्रश्न करने हैं। प्रत्येक भाग में से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा और पांचवां प्रश्न परीक्षार्थी किसी भी भाग से कर सकता हैं। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का होगा।

lD'ku&,

HkweMyhdj.k ½ अवधारणा, घटक, प्रमुख स्थापनाएँ
mÙkj vk/kfudrk ½ अर्थ परिभाषा, घटक, प्रमुख चिंतनगत प्रवृतियाँ

lD'ku&ch

nfyr&foe'k ½ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, परिभाषाएँ, दिशाएँ, प्रमुख चिंतक
vkfnoklh foe'k ½ अवधारणा, इतिहास

lD'ku&lh

L=h&foe'k ½ विचारधारा, पश्चिमी, भारतीय, परिभाषांकन, विभिन्न दिशाएँ
o)&foe'k ½ अवधारणा, इतिहास

lD'ku&Mh

vU; foe'k
पर्यावरण विमर्श
कृषक विमर्श
किन्नर विमर्श

lgk;d iLrd ½

1. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, शैलीविज्ञान का इतिहास, दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
2. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, शैली और शैलीविश्लेषण, दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
3. सुरेश कुमार, शैलीविज्ञान, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
4. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, शैलीविज्ञान : प्रतिमान और विश्लेषण, दिल्ली : देवदार प्रकाशन।